Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

SHIVAJI COLLEGE

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIII) 398

Research Methodology in Languages & Social Sciences

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Pawar B. T.
Principal
Late Dr. S. S. College
Kalamnuri, Dist.- Hingoli

Editor
Kendre D. B.
Dept. of Hindi,
Late Dr. S. S. College
Kalamnuri, Dist. - Hingoli

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CCCXCVIII) 398-A

ISSN : 2278-9308
March , 2023

Editorial Board

Chief Editor -
Prof.Virag S.Gawande,
Director,
Aadhar Social Research &,
Development Training Institute, Amravati. **[M.S.] INDIA**

Executive-Editors -

- **Dr.Dinesh W.Nichit** - Principal, Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, **Walgaon.Dist. Amravati.**
- **Dr.Sanjay J. Kothari** - Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

Advisory Board –

Dr. Meena Jadhav
Smt. Roshni Kamble
Mr. Mahesh Kamble

- **Dr. Dhnyaneshwar Yawale** - Principal, Sarswati Kala Mahavidyalaya , Dahihanda, Tq-Akola.
- **Prof.Dr. Shabab Rizvi** ,Pillai's College of Arts, Comm. & Sci., New Panvel, Navi Mumbai
- **Dr. Udaysinh R. Manepatil** ,Smt. A. R. Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji,
- **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil** , Principal, C.S. Shindure College Hupri, Dist Kolhapur
- **Dr.Usha Sinha** , Principal ,G.D.M. Mahavidyalay,Patna Magadh University.Bodhgay Bihar

Review Committee -

- **Dr. D. R. Panzade,** Assistant Pro. Yeshwantrao Chavan College, Sillod. Dist. Aurangabad (MS)
- **Dr.Suhas R.Patil** ,Principal ,Government College Of Education, Bhandara, Maharashtra
- Dr. **Kundan Ajabrao Alone** ,Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Tal-Daryapur, Dist-Amravati.
- **DR. Gajanan P. Wader** Principal , Pillai College of Arts, Commerce & Science, Panvel
- **Dr. Bhagyashree A. Deshpande,** Professor Dr. P. D. College of Law, Amravati]
- **Dr. Sandip B. Kale,** Head, Dept. of Pol. Sci., Yeshwant Mahavidyalaya, Seloo, Dist. Wardha.
- **Dr. Hrushikesh Dalai** , Asstt. Professor K.K. Sanskrit University, Ramtek

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responicible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- Executive Editor

Published by -
Prof.Virag Gawande
Aadhar Publication ,Aadhar Social Research & Development Training Institute, New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College,Amravati
(M.S) India _Pin- 444604 **Email :** aadharpublication@gmail.com
Website : www.aadharsocial.com **Mobile :** 9595560278 /

PRINCIPAL

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) –8.632, Issue NO, (CCCXCVIII) 398-A

ISSN : 2278-9308
March , 2023

INDEX-A

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Role and Importance of Ethics in Research: Issues and A Way Forward	**Dr R. S. Musale**	1
2	Research report Writing	**Dr Sandeep Ramrao Gore**	5
3	Important aspects for writing Quality Research Work.	**Dr. Balvirchandra Bapusaheb Rajurkar**	8
4	Ethnic in Applied Research and Influence of ICT on Applied Research	**Dr. Maroti Vitthalrao Bhosle**	10
5	Constructing Hypotheses in Quantitative and Qualitative Research	**Dr. Rajabhau Sidaji Mane**	15
6	Plagiarism	**Dr.Nagnath Madhavrao Phad**	17
7	Report Writing In Research	**Dr.Sudhir Prakashrao Dinde**	21
8	Research Related Reading Problems and Solutions for Students	**Dr.Vishnu R Vankar**	24
9	Methodology in Library Classification	**Prof. Sanjay Shamrao Waghmare**	27
10	Scientific Research Methods in Public Administration	**Dr. Vijay L.Tarode ,Dr. C.M.Kahalekar**	30
11	Types and Research Process	**Subhash Kishanrao Pole**	33
12	The Role of Statistical Software in Data Analysis	**Dr. Shyamsundar Pandharinath Waghmare**	35
13	Research Methods in Social Sciences & its Importance	**Mr. Kavhar Digambar**	40
14	Significance of Ethics in Research	**Ramakant Kasture**	43
15	अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया	डॉ. वसंत पुंजाजी गाडे	46
16	अनुसंधान नवनिर्माण की प्रक्रिया है	डॉ. रत्नमाला धुळे (वानखेडे)	49
17	साहित्य में शोध समस्या और विषय चयण पध्दति	डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ	52
18	अनुसंधान में प्रश्नावली एवं अनुसूची तंत्र	केंद्रे डी. बी.	55
19	ऐतिहासिक पद्धतीचे मूल्यमापन	प्रा. डॉ. क्षिरसागर बी. एस.	58
20	संशोधन अहवाल लेखनातील कौशल्य	प्रा. डॉ. बन वशिष्ठ गणपतराव	63
21	संशोधनात संशोधन आराखड्याचे महत्व	प्रा.प्रमोद भगवानराव इंगोले	66

PRINCIPAL
HINGOLI

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CCCXCVIII) 398-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

साहित्य में शोध समस्या और विषय चयण पध्दति

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
संशोधक मार्गदर्शक एवं आचार्य हिन्दी विभागाध्यक्ष शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली
ई-मेल wagh.sudhir001@gmail.com

शोधसार- मानव स्वभाव हमेशा जिज्ञासु रहा है। उस में हमेशा नित नया ज्ञान एवं वस्तु के प्रति उत्कण्ठा रही है। अपनी उसी उत्कण्ठा एवं कौतुहल को शांत करने हेतु वह शोधकार्यों के प्रति समर्पित रहता है। वर्तमान में शोध हेतु चरण बद्ध तरीकों का प्रयोग किया जाना और उनका सिद्ध होना अनिवार्य हो गया है। सामान्य भाषा में कहा जाए तो किसी कार्य को करने लिए एक योजनाबद्ध तरीका एवं पद्धतिका प्रयोग शोध प्रविधि कहलाता है।

मुख्य शब्द – शोध प्रविधि, अनुसंधान की प्रक्रिया, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, साहित्यिक अनुसंधान ।

आधुनिक युग विज्ञान का युगहै। इस वैज्ञानिक युग में शोध कार्यों का अपना एक अलग महत्व है। विज्ञान एवं शोध को मानव सभ्यता के प्रगति रूपी रथ में दो पहियों के समान कहा जा सकता है। शोध एक साधना है। शोध सत्य की खोज है। शोध कोई व्यवसाय नहीं है। वह तो मानव – जीवन को समृद्ध और सुंदर बनाने की दिशा में एक महान्कार्य होता है। मानव स्वभाव हमेशा जिज्ञासु रहा है। उस में हमे शानि तनया ज्ञान एवं वस्तु के प्रति उत्कण्ठा रही है। अपनी उसी उत्कण्ठा एवं कौतुहल को शांत करने हेतु वह शोध कार्यों के प्रति समर्पित रहता है। शोध कार्यों से नितनयी बातें सामने आती हैं। साथ ही इस से किसी भी अध्ययन को वैज्ञानिक दिशा मिलती है। इस से प्राप्त ज्ञान के आधार पर अनेक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। विभिन्न लोगों के लिए यह ज्ञान उपयोगी होता है।

अध्ययन- अध्यापन के क्षेत्र में प्रबंध लेखन की प्रक्रिया को देखें तो आरंभिक शोध और वर्तमान के शोध में बहुत अंतर आ गया है। शोध प्रविधि के सोपानों में बहुत परिवर्तन हो गया है। अतीत में जिस तरह की प्रविधि का प्रयोग किया जाता था वर्तमान में उस शोधप्रविधि का उपयोग नहीं किया जा रहा। मनुष्य जैसे जैसे विकास कर रहा वैसे- वैसे उसके कार्य करने के तरीके में परिवर्तन आता जाता है। आज शोध का मुख्य कारण वैज्ञानिक पद्धति है। मानव विकास में इतना आगे बढ़ गया है कि वह आये दिन नई-नई चीजों का अविष्कार कर रहा। यह आविष्कार, खोज किसी कार्य को नयी पद्धति और नए क्रम से कर ने के लिए प्रेरित करता है। पहले मनुष्य जब किसी समस्या का समाधान ढूंढता था तब अनिवार्यता वश समाधान खोजना होता था। इस खोज के लिए कोई निश्चित प्रणाली या कोई योजना नहीं होती थी। संभवतः उसकी कुछ क्रियाए मात्र आवश्यकता पूर्ति या समस्या समाधान से भी संबंधित नहीं होती थी। अतीत में किए जानेवाले शोध में ऐसा हो सकता है कि शोधकर्ता अपनी बुद्धि अथवा कौशल की स्वाभाविक इच्छा से कुछ काम किया हो। कुछ ऐसे काम या चरण जिनका औपचारिक रूप से शोध से संबंध न रहा हो। इन सभी में सुनिश्चित लक्ष्य, कार्य प्रणाली या योजना नहीं होती थी। इस लिए वर्तमान में इन प्रवृत्तियों को अनुसंधान नहीं माना जा सकता क्योंकी इस में ना तो कोई योजना होती थी और ना ही किसी वैज्ञानिक पद्धति पर का प्रयोगा इन से मानव मस्तिष्क में निहित ज्ञान पिपासा और शोध वृति का प्रमाण मिलता है लेकिन इसकी प्रामाणिकता सिद्ध नहीं हो पाती। अतीत में भी शोध कार्य होते रहे हैं पर उसको वर्तमान शोध जैसा नहीं कहा जा सकता। वर्तमान में शोध हेतु चरणबद्ध तरीकों का प्रयोग किया जाना और उनका सिद्ध होना अनिवार्य हो गया है। अतीत के शोध के संदर्भ में यह भी नहीं कहा जा सकता है कि तब किसी प्रकार का शोध कार्य या वैज्ञानिक ढंग का शोध कार्य हुए ही नहीं है। अतीत में शोधकार्य बहुत हुए हैं लेकिन वर्तमान के शोध कार्य में प्रयुक्त होनेवाली शोधप्रविधियों जैसे सिद्धांत अथवा प्रविधिका प्रयोग नहीं होता था।

ज्ञान सामाग्री का विकास जैसे-जैसे बढ़ा वैसे-वैसे ही मनुष्य की बुद्धिका विकास भी तेजी से हुआ। मनुष्य ने शोध के साथ एक नए नाम को नमित किया जिस को आज परिभाषित करते हुए हम शोधप्रविधि कहते हैं। सामान्य भाषा में कहा जाए तो किसी कार्य को करने लिए एक योजना बद्ध तरीका एवं पद्धति का प्रयोग शोध प्रविधि कहलाता है। सुनियोजित अनुसंधान की प्रक्रिया बहुत तीव्र एवं गहन होती है। इनका प्रयोग विशिष्ट उद्देश्यों की सिद्धि के लिए किया जाता है। छोटीसी कलम या पेन्सिल से लेकर अंतरिक्ष यान के निर्माण, खाना पकाने के स्टोव से लेकर विनाशकारी अणु-परमाणु आयुधों आदि के निर्माण एवं सुधार में, नए तौर-तरीकों एवं अद्यनता को जोड़ ने के लिए शोध होता रहता है। परम सूक्ष्मजीवाणु ओं से लेकर हर जीवित जीव धारी की संरचना, जैव- व्यापारों की खोज होती

रहती है। संवेदना ओं को लिपि प्रतीकों द्वारा प्रस्तुत करनेवाले साहित्य और नाद के माध्यम से संवाहित करने वाले संगीत के सृजन एवं आस्वादन प्रक्रिया ओं को गहराई से जान ने के लिए अनुसंधान होते रहते हैं। इस तरह जीवन का हर क्षेत्र अब अनुसंधान से प्रभावित है और हर प्रवृत्ति अनुसंधान के लिए प्रेरक है। किसी भी विषय से संबंधित शोध के लिए साहित्य की समीक्षा कर ने के कई कारण होते हैं। साहित्य की समीक्षा शोध में बहुत सहायक होती है।

किसी भी शोध कार्य में समस्या का होना अति आवश्यक है क्यों की अगर समस्या नहीं है तो शोध कार्य किस बिंदु पर किया जायेगा। इस लिए शोधार्थी द्वारा सबसे पहले समस्या के पहचान के स्तर पर कार्य किया जाता है। शोध हेतु शोधार्थी एक समस्या का चयन करता है। इस समस्या चयन के लिए यह भी ध्यान दिया जाना जरूरी होता है कि उस समस्या का चयन अथवा उस ढंग की समस्या का चयन किसी अन्य संस्थान के शोधार्थी द्वारा या फिर उसी संस्थान के किसी अन्य शोधार्थी द्वारा न किया गया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या पूर्णतः नई और मौलिक होनी चाहिए शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या पर किसी अन्य द्वारा शोध किया गया है अथवा न हीं इस विषय को जानने के लिए शोधार्थी अपने द्वारा चुने गए समस्या के बारे जानने की कोशिश करता है। इस के लिए वह कई प्रकार की विधियों का उपयोग करता है।

शोध कार्य करने के लिए जिन बातों पर ध्यान दिया जाता है वह निम्न प्रकार से दिखाई देते है

विषय वस्तु के अध्ययन की पृष्ठभूमि

शोधार्थी को शोध कार्य करने से पहले उसकी किस विषय में रूची है यह देखना अत्यंत आवश्यक होता है। शोधकार्य हेतु जिस विषय का चयन किया जा रहा है उस विषय से संबंधित ज्ञान का पूर्व अध्ययन आवश्यक होता है। इस के बिना अध्ययन के शोधकार्य में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। इस लिए यह जरूरी होता है कि शोधार्थी समस्या चयन के पूर्व संबन्धित विषय की पृष्ठभूमि के बारे में बेहतर ढंग से अध्ययन कर के अवगत हो जाए शोधार्थी को उस कठिनाई से बचने के लिए शोध विषय से संबंधित अन्य क्षेत्रों का अध्ययन आवश्यक होता है। इस तरह शोधार्थी अपने ज्ञान और क्षमता का परिक्षण कर पाता है साथ ही यह जान भी लेता है कि क्या वह चयनित विषय पर शोध कर पाएगा अथवा नहीं और संबंधित विषय पर उसके द्वारा शोध किया जाना उचित होगा या नहीं। शोधार्थी के रूची पर ही सब कुछ निर्भर रहता है।

विभिन्न सिद्धांत एवं पद्धतियाँ

साहित्य समीक्षा की सामग्री का अध्ययन करने के उपरांत ही शोधकर्ता को पूर्व में उपयोग में लाये गए विभिन्न सिद्धांतों एवं पद्धतियों को जानने का अवसर मिलता है। साथ ही नवीन अध्ययन पद्धति कितनी सफल हो सकती है इस विषय को भी जानने- समझने का अवसर मिलता है। जिससे वर्तमान में हो रहे शोध कार्य में वह गलती फिर से न हो। साहित्य समीक्षा के माध्यम से दूसरे शोधकर्ता ओं के द्वारा शोधकार्य में प्रयोग की गई विश्लेषणात्मक ढांचा एवं रणनीति को जानने का अवसर मिलता है। इस अवसर से शोधकर्ता यह निर्णय कर ने की स्थिति मेंहोता है कि क्या यह रणनीति उसके शोधकार्य हेतु उचित होगी या नहीं।

उपयुक्त विषय (समस्या) की खोज

शोधार्थी को अनुसंधान करने से पूर्व उस विषय की सही समस्या की खोज के लिए स्रोतों का अनुसंधान आवश्यक होता है। इस कार्य के लिए किसी शोध संस्था अथवा जीवीत साहित्यकारों से संपर्क स्थापित करना अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। इसके साथ समस्यासे जुड़े पुस्तकों का अवलोकन अति आवश्यक होता है। इस कार्य हेतु विषय के जानकार व्यक्ति से संपर्क करना उपयुक्त समस्या के चयन में सहायक होता है। साथ ही एक विषय पर ध्यान देने की जरूरत होती है। जैसे कि जिस उपाधि के लिए समस्या का चयन किया जा रहा है क्या वह समस्या उस उपाधि के लिए उचित है अथवा नहीं। क्योंकि शोधकार्य के पद के अनुकूल ही समस्या का चयन किया जाना सही होता है। लघु शोधप्रबंध का विषय शोधप्रबंध के विषय से भिन्न होना चाहिए।

शोध सामग्री की सहजता

शोध कार्य हेतु समस्या का चयन करते समय शोधकर्ता को यह भी देना चाहिए कि उसके द्वारा चयनित समस्या हेतु पाठ्य सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता है या नहीं। क्यों की समस्या के समाधान के आभाव में शोधकर्ता अपने शोधकार्य को आगे नहीं बढ़ा सकता। साथ ही शोध सामग्री के आभाव में शोधका निष्कर्ष मौलिक न होकर भ्रामक हो सकता है। इस लिए यह बहुत जरूरी होता है कि शोधकर्ता को चयनित शोधविषय पर उपलब्ध पाठ्य सामाग्री के बारे में अच्छे से ज्ञान हो।

ज्ञान का विस्तारण एवं नयापन

शोध कार्य करनेवाले शोधार्थी को उसके चयनीत विषय से ज्ञान का विस्तार और अनुसंधान से नया पण मिलना चाहिए। किसी भी शोधविषय की उपयोगिता एवं मौलिकता इस बात पर आधारित है कि उसमें कितनी मौलिकता एवं कितना नयापन है। शोधकार्य के दौरान शोधार्थी की प्रमाणिकता के साथ नए ज्ञान के नए आयामों को

खोजने का काम करता है। किसी भी शोधकर्ता में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास उस समय तक हो जाना चाहिए जब वह अपने शोधकार्य हेतु किसी समस्या को चयनित करता है। क्योंकी यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही उसे समस्या के मूल तक ले जाती है। इस की उपयोगिता उसे शोधनिष्कर्ष में मौलिकता तथा नयापन लाने में सहयोग प्रदान करती है।

शोधार्थी के रूचि अनुकूल

शोधार्थी को अपनी रूची की अनुरूप ही विषय का चयन करना चाहिए। शोधार्थी की रूचि किस तरह की समस्यामें है यह शोधार्थी को पता होना जरीरी हैं। साथ ही इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए विषय की परिस्थित सुविधा के अनुकूल हो। बिना रुचि के विषय चयन करने के बाद उस शोधकार्य को पूरा करने में कई समस्याएं आ सकती है। साथ ही समस्या के मूल की तलाश भी सही ढंग से नहीं हो सकेगी। इस लिए शोध कार्य में समस्या के मूल की तलाश के लिए विषय चयन में शोधार्थी की रुचि होना बहुत जरूरी होता है। कई बार यही देखा गया है कि अगर शोधार्थी की रूची चयनीत विषय में नही है तो सही अनुसंधान नही होता है।

विषय का शीर्षक (नामकरण)

अनुसंधान करने वाले विषय का नामकरण करते समय कई महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। शोधकार्य में शोध विषयका शीर्षक बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। शीर्षक विषय के अनुकूल नहीं है। तो यह इस बात का प्रतीक है कि शोधकर्ता को विषय का ज्ञान नहीं है या विषय चयन करते समय उसकी दृष्टि अस्पष्ट थी। साथही विषय के अनुकूल शीर्षक न होने से शोध ग्रंथ के प्रकाशन के पश्चात पाठकों के भ्रमित करनेका काम करेगा। इस लिए विषय के मूल में शीर्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिर्षक के पढते ही पाठक का ध्यान उस पुस्तक की ओर जाना चाहिए।

शोध विषय का अतिव्यापक न होना

शोधार्थी अपने शोधकार्य का विषय निश्चित करने के उपरांत उसने अपनी अनुसंधान की समय सिमा निश्चित करनी चाहिए। शोध के लिए चयनित विषय ऐसा होना चाहिए कि उसका स्वरूप न बहुत व्यापक हो और नाही बहुत सीमिता इसलिए शोधकर्ता को शोध हेतु ऐसे विषय का चयन करना चाहिए जिस को वह अपने निर्धारित समय में पूरा कर सके। समस्या के मूल की तलाश में शोधार्थी को कई सारे पहलु ओं को देखना पड़ता है। जैसे कि शोध समस्या से संबंधित क्षेत्र, सामग्री संकलन, समस्या के साथ विषय क्षेत्र का ताल मेल, शोध समस्या कहा से संबंधित है तथा उस शोध समस्या के नवीन समाधान के लिए किस तरह की सामग्री उपयुक्त होगी। विषय की व्यापकता के कारण अनुसंधान भटक भी समता है और शोधार्थी उस शोध पर सही रूप से न्याय नहीं दे पाता है।

शोध प्रश्नों को परिभाषित करने एवं इस पर विस्तृत रूप से विचार का अवसर मिलता है। साहित्य समीक्षा व्यवहार एवं सिद्धांत के बीच संबंधों की पहचान में मदद करता है। यह कार्य शोधार्थी के शोधविषय के क्षेत्र पर निर्भर करता है। साहित्य समीक्षा द्वारा शोधकर्ता को शोधविषय से संबंधित शब्दकोश का प्रयोग करना अथवा शोध लेखन की भाषा सीखने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही शोध समस्या पर किस प्रकार से कार्य किये गए हैं और किस प्रकार के कार्य करने अभी बाकि हैं इन सभी के बारे में जानकारी मिलती है।

निष्कर्ष

शोध लेखन एक महत्त्व पूर्ण काम होता है। किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व कई ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न होते हैं जिन के बारे में शोधार्थी को विस्तृत ज्ञान होना बहुत आवश्यक होता है। शोधार्थी द्वारा चयनित विषय पर चिंतन-मनन के माध्यम से समस्या के मूल की पहचान की जाती है और उसके बाद शोध हेतु प्रस्ताव निर्मित किया जाता है। इस लिए शोध कार्य के अंतर्गत समस्या के मूल की पहचान को समझना और और शोध में इस का सही ढंग से प्रयोग किया जाना आवश्यक होता है। शोधकार्य में अतीत एवं वर्तमान की पड़ताल बहुत महत्त्वपूर्ण है। अद्यतन मनुष्य आये दिन नए खोज कर रहा है। हमारे देश में बहुत सारे शोधकार्य प्रत्येक वर्ष हो रहे हैं। जिस के कारण जब कोई शोधकर्ता कोई नया शोधकार्य प्रारंभ करता है तो उसकी नैतिक जिम्मेदारी होती है कि वह जिस विषय अथवा समस्या पर शोध करने जा रहा है। उसके बारे में अच्छे से जांच- पड़ताल कर लेता कि भविष्य में शोधप्रबंध लेखन के दौरान उसे किसी प्रकार की कोई समस्या या अवरोध का समाना न करना पड़े। इस अवरोध से बचने के लिए शोध प्रविधि में शोध समस्या का चयन करने के बाद उसके बारे में जानकारी एकत्र करना जरूरी होता है। इसकी सहायता से शोधार्थी किसी अन्यशोधार्थी द्वारा किये गए शोध को फिर से अपने विषय के रूप में न चुन ले। साथ ही उसे यह भी पता चल जाता है कि क्या उसने जो समस्या लि है वह वास्तविक रूप में समस्या के रूप में उचित है अथवा नहीं? साथ ही उसके समाधान के लिए सामग्री उपलब्ध है अथवा नहीं? इत्यादि प्रश्नों से संबंधित समस्याओं से शोधकर्ता को बचाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एरवाल, प्रबोध मोरेश्वर, अनुसंधान पद्धति एवं स्वास्थ्य सांख्यिकीय, चौखंभा सुर भारती प्रकाशन, वाराणसी प्र.स. 2010
2. गणेशन, एस. एन. अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद, प्र.स. 2019
3. खराटे मधु, अनुसंधान प्रविधि और प्रकिया, विद्या प्रकाशन कानपुर, प्र. स. 2008

PRINCIPAL